अपनी ओर से

एक हजार एक कारण हैं कि हम विद्रोह करें और इनमें से चन्द एक ही काफी है कि हम अपनी तैयारियां तेज कर दें

आर्थिक "सुधारों" का बीता दशक देश के आम अवाम के लिए अकथनीय पीड़ा-व्यथा का दशक साबित हुआ है। लेकिन हमारे जालिम हुक्मरान अवाम को रौंदते-कुचलते आगे बढ़ते जा रहे हैं – और अधिक बेशर्मी के साथ, और अधिक उद्धत – आक्रामक अन्दाज में "सुधारों" के नये चरण में नयी-नयी घोषणाएं की जा रही हैं। मौत की घाटियों में भी रास लीला रचाने वालों को भला जनता के दुख-दर्द से क्या लेना-देना! सोचना तो उन विद्रोही युवाओं को है जो इस विनाश-यात्रा के मूकदर्शक नहीं बने रह सकते, जो अपने लोगों और अपने देश से सच्चा प्यार करते हैं।

भूमण्डलीकरण के नाम पर जारी इस विनाश यात्रा में छंटनी-तालाबन्दी, बेकारी, भुखमरी और व्यापक सामाजिक तबाही की जो स्थितियां सामने आयी हैं, उसकी तस्वीर न तो अखबारी रिपोर्टों से उभर सकती है और न ही किसी तरह की आंकड़ेबाजी इसे चित्रित कर सकती है। अगर आपके पास एक धड़कता हुआ दिल है और आंखें खुली तो आप उस चरम निराशा और बेबसी को महसूस कर सकते हैं जो समूचे परिवार की आत्महत्याओं की खबरों के बीच दबी रहती है। महीने में आधे दिन खाली हाथ लेबर चौकों से लौट आ रहे दिहाड़ी मज़दूर, कारखाने के गेट पर चस्पां की जा रही तालाबन्दी की नोटिसें, छंटनी की फेहरिस्त, किसी अनजानी उम्मीद में नौकरियों के फार्म बेचने वालों की दुकानों पर उमड़ती युवाओं की भीड़, प्रतियोगिता परीक्षा का रिजल्ट देखकर एक बार फिर मायूस होकर घर लौटते युवा, लकदक-जगमग बाज़ारों से कुंठित-हताश लौटते खरीदार, एक बार फिर रिश्ता पक्का न होने पर अपनी जवान बेटी से नज़रें चुराते बाप और किसी सदर अस्पताल के बरामदे में बीमार बच्चे को भरती कर लेने के लिए रोता-गिड़गिड़ाता दूर-दराज गांव से आया कोई ग़रीब ...।

विश्व पटल पर जो घटनाएं घट रही है। उनसे नयी सदी में साम्राज्यवाद-पूंजीवाद के मौजूदा अन्धकार युग के अवसान के संकेत मिल रहे हैं। इन संकेतों के ब्यौरों में जाया जा सकता है या विश्व परिस्थितियों का व्याख्या-विश्लेषण भी किया जा सकता है लेकिन बहुतेरे कारण इतने साफ दिख रहे हैं कि एक आम समझ के नौजवान के लिए भी यह समझना कठिन नहीं है कि उन्हें इस निज़ामे कोहना के खिलाफ खुली बगावत का ऐलान कर देना चाहिए।

भूमंडलीकरण की इस जहरीली आबो-हवा में पूरे भूमंडल पर मानवता की पीड़ा-व्यथा का यही मंजर पसरा हुआ है। अमेरिकी बमबारी से क्षत-विक्षत इराक में संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिबन्धों के कारण दवा के अभाव में हर साल मरते लाखों बच्चे, फिलिस्तीन अवाम के स्वाभिमान और आज़ादी की चाहत को बमों से उड़ा देने की उद्दंड इस्रायली कोशिशें, अफ्रीकी देशों में फैली भुखमरी और कुपोषण के हालात, खुद पश्चिमी दुनिया के "स्वर्गों" में बढ़ती बेकारों की भीड़, सामाजिक तनाव, हताशा-निराशा ... ये भूमण्डलीकरण के दौर में पूरे भूमण्डल पर फैली मानवता की धूसर-बदरंग तस्वीर के कुछ टुकड़े मात्र हैं। लेकिन इनसे पूरी तस्वीर साफ-साफ देखी जा सकती है।

जब दुनिया के ये हालात हों और देश के भीतर आम जनजीवन की आम तबाही का यह आलम तो ऐसे में सिर्फ फीस बढ़ोत्तरी, सीटों में कटौती या कैम्पस की कुछेक सुविधाओं में कटौती के मुद्दे पर ही सीमित नहीं रहा जा सकता। जब देश की सत्ता चरम निरंकुशता की ओर तेजी से सरकती जा रही हो और हवा गोलियों की गन्ध से घुट रही हो तो क्या सिर्फ कैम्पसों के प्रशासन की निरंकुशता के खिलाफ लड़ने तक ही सीमित रहा जा सकता है। कैम्पस की ये लड़ाइयां जरूरी हैं, बेहद जरूरी, लेकिन इतना ही जरूरी यह भी है, बल्कि कहीं ज्यादा जरूरी कि आज छात्र-युवा समाज के इन वृहत्तर सवालों पर सोचें और नयी सदी में संघर्षों की नयी दिशाएं, नयी राहें खोजें।

देश के भीतर निजीकरण-उदारीकरण के पिछले एक दशक के सफर ने, 1947 से लेकर अब तक के दौर

ने, साम्राज्यवाद की पूरी एक शताब्दी ने, आर्थिक नव उपनिवेशवाद के पिछले एक-डेढ़ दशक के दौरान घटी घटनाओं ने अब हर तरह से यह सिद्ध कर दिया है कि साम्राज्यवाद और पूंजीवाद का एक-एक पल अब हमारे लिए भारी है। इनका नाश जीवन और सृजन प्रगति की शर्त है। इनके विरुद्ध विद्रोह उचित ही नहीं अनिवार्य है।

विश्व पटल पर जो घटनाएं घट रही है। उनसे नयी सदी में साम्राज्यवाद-पूंजीवाद के मौजूदा अन्धकार युग के अवसान के संकेत मिल रहे हैं। इन संकेतों के ब्यौरों में जाया जा सकता है या विश्व परिस्थितियों का व्याख्या-विश्लेषण भी किया जा सकता है लेकिन बहुतेरे कारण इतने साफ दिख रहे हैं कि एक आम समझ के नौजवान के लिए भी यह समझना कठिन नहीं है कि उन्हें इस निज़ामे कोहना के खिलाफ खुली बगावत का ऐलान कर देना चाहिए।

नौजवानों को इस व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह कर देना चाहिए क्योंकि वर्तमान आपदाओं से मुक्ति का यही एकमात्र रास्ता है। पूंजीवाद के किसी भी माडल के पास महंगाई, बेरोजगारी से मुक्ति का उपाय नहीं है। यह अन्तिम तौर पर सिद्ध हो चुका है कि पूंजीवादी विकास का एकमात्र अर्थ आंसुओं के महासमुद्र में ऐश्वर्य के द्वीपों और विलासिता की मीनारों का निर्माण है।

नयी सदी के इस पहले वर्ष में हम अपने देश की आम जनता के बहादुर सपूतों का इस निज़ाम के खिलाफ खुली बगावत के लिए आह्वान करते हैं। छात्रों-युवाओं से हमारा कहना है कि गीली लकड़ी की मानिन्द धुआंने-सुलगने के बजाय भभककर जल उठो! विद्रोह करो!

हमें इसलिए विद्रोह कर देना चाहिए कि यह इतिहास का निर्देश है। लूटखसोट, मारकाट और युद्धों के कुकर्मों ने साम्राज्यवाद के पापों का घड़ा भर दिया है। इतिहास ने उसे मौत की सजा सुना दी है। सवाल सिर्फ यह है कि मेहनतकशों के बहादुर सपूत इस हुक्म की तामील कब करते हैं।

हमें इसलिए विद्रोह कर देना चाहिए क्योंकि विश्व स्तर पर पूंजीवाद की संस्कृति उन्माद, बीमारियों, पागलपन, अकेलापन और अलगाव की संस्कृति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रह गयी है। पूंजीवादी जनवाद का असली पूंजीधर्मी चरित्र नंगा हो चुका है और अब इसकी ऐतिहासिक सकारात्मकता निश्शेष हो चुकी है।

यदि हम एक जिन्दा कौम के नौजवान हैं तो हमें विद्रोह की तैयारियां तेज कर देना चाहिए। यह विद्रोह न्यायसंगत ही नहीं बल्कि शहीदे-आज़म भगतसिंह के शब्दों में कहें तो हम नौजवानों का बुनियादी कर्तव्य है।

यथास्थिति को झेलने की जगह बगावत का झण्डा बुलन्द कर देने के लिए एक हजार एक कारण आज मौजूद हैं, पर ध्यान से सोचें चन्द एक ही काफी हैं कि हम अपनी तैयारियां तेज कर दें।

इसलिए, नयी सदी के इस पहले वर्ष में हम अपने देश की आम जनता के बहादुर सपूतों का इस निज़ाम के खिलाफ खुली बगावत के लिए आह्वान करते हैं। छात्रों-युवाओं से हमारा कहना है कि गीली लकड़ी की मानिन्द धुआंने-सुलगने के बजाय भभककर जल उठो! विद्रोह करो! इसकी तैयारी आज ही से शुरू कर दो! विद्रोह करो! और विद्रोह से क्रान्ति की ओर आगे बढ़ो! ❑

शहीदे आज़म के जन्मदिवस 27 सितम्बर के अवसर पर

"हम जनता का ध्यान इतिहास में बराबर दोहराये गये इस सबक की ओर दिलाना चाहते हैं कि गुलामी और बेबसी से कराहती जनता को कुचलना आसान है, परन्तु विचार अमर होते हैं और दुनिया की कोई ताकत उन्हें कुचल नहीं सकती। दुनिया में अनेक बड़े बड़े साम्राज्य नष्ट हो गये, परन्तु जनसाधारण ने जिन विचारों से प्रेरित होकर इन्हें समाप्त किया वे आज भी जीवित हैं

(केन्द्रीय असम्बली में भगतसिंह-बटुकेश्वर दत्त द्वारा बम विस्फोट के बाद फेंके पर्चे से)